

BHDE-144 (CBCS)

बी.एच.डी.ई.-144
(BAG)

सत्रीय कार्य
(जुलाई-2026 एवं जनवरी-2027 सत्र के लिए)

छायावाद

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.ई.-144



मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली-110068

छायावाद सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.ई. 144

प्रिय छात्र/छात्राओं,

इस पाठ्यक्रम में आपको एक सत्रीय कार्य करना है। यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (टी.एम.ए.) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किये गये हैं। अंतिम परीक्षा, परिणाम में, सभी सत्रीय कार्यों के लिए 30 प्रतिशत अंक निर्धारित है, जबकि सत्रांत परीक्षा के लिए 70 प्रतिशत अंक।

उद्देश्य : सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप स्वयं उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। उद्देश्य यह भी है कि अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा और समझा है उसे आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरंभ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1. ऐच्छिक पाठ्यक्रम के लिए कार्यक्रम दर्शिका में दिए गए विस्तृत निर्देशों का सावधानी पूर्वक अध्ययन कीजिए।
2. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।
3. अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के प्रथम पृष्ठ के मध्य भाग में पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख कीजिए।
4. उत्तर पुस्तिका का प्रथम पृष्ठ निम्न प्रकार से शुरू होगा :

अनुक्रमांक :

नाम :

पता :

पाठ्यक्रम का नाम/कोड :

सत्रीय कार्य कोड :

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड :

दिनांक :

5. उत्तर के लिए केवल फुलस्केप के आकार के कागज़ का इस्तेमाल करें और उन कागज़ों को अच्छी तरह से बाँध लें।
6. प्रत्येक उत्तर के पहले प्रश्न संख्या अवश्य लिखें और अपनी ही लिखावट में उत्तर दें।
7. सत्रीय कार्य पूरा करके जाँच के लिए अपने अध्ययन केन्द्र के संयोजक (Coordinator) के पास निर्धारित तिथि तक अवश्य जमा करा दें।

सत्रीय कार्य जमा करने की अंतिम तिथि :

जुलाई 2026 में प्रवेश लेने वाले छात्रों के लिए सत्रीय कार्य जमा करने की

अंतिम तिथि : 31 मार्च, 2027

जनवरी 2027 में प्रवेश लेने वाले छात्रों के लिए सत्रीय कार्य जमा करने की

अंतिम तिथि : 30 सितंबर, 2027

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश :

सत्रीय कार्य के दो खंड हैं और उसमें दो तरह के प्रश्न पूछे गए हैं। उत्तर देने के लिए आप निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आपके लिए लाभप्रद होगा :

उत्तर देने के लिए आप निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आपके लिए लाभप्रद होगा :

1. **अध्ययन** : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में सभी खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।
2. **अभ्यास** : अपने उत्तर का प्रारूप लिखने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार का विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्ध और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

- क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,
- ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो,
- ग) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा जो आपकी अभिव्यक्ति, शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो।
- घ) उत्तर प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबा न हो, और
- ड) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

1. **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसको साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

2. **विशेष** : अपने उत्तर की फोटो प्रति/कार्बन प्रति अपने पास अवश्य रखें।

शुभकामनाओं सहित!

नोट : याद रखें कि विश्वविद्यालय के नए नियमानुसार परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य
संपूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित
बी.एच.डी.ई.-144 : छायावाद

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.ई.-144/BAG
सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.डी.ई.-144 / 2026-2027
कुल अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड – क

1. निम्नलिखित पद्यांशों की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए :

10×4=40

- (क) हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छांह
एक पुरुष, भीगे नयनों से, देख रहा था प्रलय प्रवाह !
नीचे जल था, ऊपर हिम था, एक तरल था एक सघन,
एक तत्व की ही प्रधानता, कहो उसे जड़ या चेतन।
- (ख) जूही की कली
विजन-वन-वल्लरी पर
सोती थी सुहाग-भरी-स्नेह-स्वप्न-मग्न-
अमल-कोमल-तनु तरुणी – जुही की कली,
दृग बन्द किये, शिथिल, – पत्राङ्क में,
वासन्ती निशा थी:
विरह-विधुर-प्रिया-संग छोड़
किसी दूर देश में था पवन
जिसे कहते हैं मलयानिल।
- (ग) नौका से उठतीं जल-हिलोर,
हिल पड़ते नभ के ओर-छोर!
विस्फारित नयनों से निश्चल कुल खोज रहे चल तारक दल
ज्योतित कर नभ का अन्तस्तल:
जिनके लघु दीपों को चंचल, अचंचल की ओट किये अविरल
फिरतीं लहरें लुक-छिप पल-पल!
सामने शुक्र की छवि झलमल, पैरती परी-सी जल में कल,
रुपहरे कचों में ही ओझल!
लहरों के घूँघट से झुक-झुक, दशमी का शशि तिर्यक्-मुख
दिखलाता, मुग्धा-सा रुक-रुक !

- (घ) सौरभ फैला विपुल धूप बन,
मृदुल मोम सा घुल रे मृदु तनय
दे प्रकाश का सिन्धु अपरिमित,
तेरे जीवन का अणु गल-गल !
पुलक-पुलक मेरे दीपक जल !

खंड – ख

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में उत्तर दीजिए :

10×4 =40

2. छायावाद की शक्ति और सीमाओं पर प्रकाश डालिए।
3. जयशंकर प्रसाद के काव्य में राष्ट्रीय चेतना और मानवीयता पर विस्तार से चर्चा कीजिए।
4. निराला की काव्य-भाषा की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
5. महादेवी वर्मा के काव्य की अन्तर्वस्तु को समझाइए।

खंड – ग

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में उत्तर दीजिए :

5×4 =20

6. छायावाद की पृष्ठभूमि पर टिप्पणी लिखिए।
7. जयशंकर प्रसाद के काव्य में प्रकृति चित्रण को स्पष्ट कीजिए।
8. निराला की काव्य संवेदना पर संक्षेप में टिप्पणी लिखिए।
9. पंत के काव्य में नारी भावना के मूल वैशिष्ट्य को बताइये।